शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-june-2025-no3*

भारतीय ज्ञान परंपरा के सन्दर्भ में शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण

प्राप्तिः 08.09.2025
स्वीकृतः 15.09.2025

68

अखिलेश कुमार चौरसिया
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र विभाग)
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. मणि जोशी
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
(शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्रीजयनारायण मिश्र पी. जी. कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः *manijoshi9@yahoo.in*

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास वैदिक काल से आरंभ होकर वर्तमान में नई शिक्षा नीति–2020 तक अनवरत रूप से चलती चली आ रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में विभिन्न चुनौतियों जैसे–मापदंड के अनुरूप पाठ्यक्रम में लचीलापन, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा, कौशल–युक्त शिक्षा तथा नए ज्ञान का सृजन करने वाली सृजनात्मक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, एकीकृत एवं समावेशी शिक्षा प्रदान करना आधुनिक युग में शिक्षकों के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप प्रदान करना किसी चुनौती से कम नहीं है। सन–2047 तक भारत को विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें नई शिक्षा नीति, नवाचार, तकनीकी ज्ञान, अनुसंधान द्वारा नित्य नए सूचना एवं प्रौद्योगिकी तकनीकी का प्रयोग छात्रों के ज्ञान को उन्नतशील बनाने के लिए आवश्यक हैं। अतः शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मुख्य रूप से समावेशी विकास के लिए रोजगारपरक एवं तकनीकी ज्ञान को उन्नतशील और सृजनात्मक रूप से प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि ज्ञानार्जन के दौरान छात्रों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य बिंदु

भारतीय ज्ञान परम्परा, वैदिक–कालीन शिक्षा, बौद्ध–कालीन शिक्षा, जैन–कालीन शिक्षा, मुस्लिम–कालीन शिक्षा, ब्रिटिश–कालीन शिक्षा, शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां।

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा के विकास के क्रम में क्रमशः वैदिक कालीन शिक्षा, बौद्ध कालीन शिक्षा, मुस्लिम कालीन शिक्षा, ब्रिटिश कालीन शिक्षा तथा आधुनिक कालीन शिक्षा के रूप में विभक्त किया जा सकता

है। भारतीय शिक्षा दर्शन में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद घोष, स्वामी दयानंद सरस्वती, रविंद्र नाथ टैगोर, सर्वपल्ली राधाकृष्णन तथा महात्मा गांधी जैसे महान शिक्षा दार्शनिक हुए हैं, जिन्होंने अपने शैक्षिक विचारों से भारतीय शिक्षा जगत को अलंकृत किया है। भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार ब्रिटिश शासन काल से प्रारंभ हुआ।भारत के स्वतंत्रता के उपरांत गठित प्रमुख शिक्षा आयोगों में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग)1948–49 माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) 1952–53 एवं राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग)1964–66 ने भारतीय शिक्षा के उदय में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तदोपरांत आधुनिक भारतीय शिक्षा को और भी सुदृढ़ एवं उपयोगी बनाने हेतु भारत सरकार ने कई शिक्षा नीतियां बनायी और उसे क्रियान्वित किया। जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1968, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1992 (श्रीराम मूर्ति समिति–1990 तथा जनार्दन रेड्डी समिति–1992), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग–2005 तथा वर्तमान में नई शिक्षा नीति–2020 की भूमिका प्रमुख हैं ।

शिक्षा किसी राष्ट्र के संपूर्ण राष्ट्रीय विकास की कुंजी है । यह राष्ट्र के संवैधानिक प्रावधानों के पुनरावलोकन के अंतर्गत आता है। राष्ट्र के विकास के लिए शैक्षिक नीतियां एवं योजनाएं संवैधानिक विस्तार तथा प्रावधान के अनुसार बनाई जाती हैं। शिक्षा आयोगों एवं शिक्षा नीतियों को बनाना ही पर्याप्त नहीं है, यद्यपि शिक्षा आयोगों एवं शिक्षा नीतियों की अनुशंसाओं को क्रियान्वित करना भी आवश्यक होता है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग–2005 का वर्तमान भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को महत्व देता है। जिसके अंतर्गत शिक्षा में सुधार, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना, ज्ञान तक पहुंच बढ़ाना, ज्ञान का अनुप्रयोग तथा ज्ञान का सृजन करना मुख्य है।राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की सिफारिशों के द्वारा भारत के शिक्षा, शोध, नवाचार एवं ज्ञान के क्षेत्रों में सुधारात्मक कार्य हुए हैं।

एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक व्यवस्थित रूप से स्थानांतरित होने की संस्कृति एवं कला को भारतीय ज्ञान परम्परा कहा गया है। यह भारतीय संस्कृति के पहचान का आधार है। जो हमारी संस्कृति को संरक्षित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा हमारी ज्ञान एवं विज्ञान के साथ दर्शन एवं कला संस्कृति को अक्षुण रखने में सहायक है। अतः यह कहा जा सकता है कि, भारतीय ज्ञान परंपरा को नई शिक्षा नीति–2020 में एक महत्वपूर्ण भूमिका के आधार के रूप में सम्मिलित किया गया हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत प्रमुख बिंदुओं के अंतर्गत आयुर्वेद, योग, भारतीय दर्शन, भारतीय संगीत, एवं कला मुख्य बिंदु हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के साथ वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु आधुनिक शिक्षा को भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप प्रदान किया जाना चाहिए ताकि युवा पीढ़ी संस्कार व तकनिकी युक्त ज्ञान को सुलभ एवं साहस रूप से ग्रहण करने में सक्षम हो सकें।भारतीय ज्ञान परम्परा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक गुरुओं से शिष्यों तक ज्ञान का स्थानांतरण होता रहा है, जिसका अध्ययन निम्न बिंदुओं के अंतर्गत विस्तार से किया जाएगा।

- वैदिक काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ।
- बौद्ध काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ।

- जैन काल में भारतीय ज्ञान परम्परा।
- मुस्लिम काल में भारतीय ज्ञान परंपरा ।
- ब्रिटिश काल में भारतीय ज्ञान परम्परा
- विभिन्न आयोग एवं नीतियां।

वैदिक काल में भारतीय ज्ञान परम्पराः

भारतीय ज्ञान परंपरा को प्राचीन काल से ज्ञान एवं संस्कृति का आधारभूत ढांचा माना गया है। इसमें मुख्यता वेद, वेदांग एवं उपनिषद् आदि के माध्यम से गुरू अपने शिष्यों को मौखिक रूप से ज्ञान प्रदान करते थे। इसके अंतर्गत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान अर्जन के साथ ही साथ आचरण में शुद्धता होना तथा आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास को प्रमुख माना जाता था। वैदिक काल के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा में नैतिक मूल्यों व धार्मिक ज्ञानार्जन का वर्णन वैश्विक साहित्यों में देखने को मिलता है। योग एवं दर्शन शास्त्र का भी वैदिक काल एवं साहित्य में प्रमुख स्थान है। भारतीय ज्ञान परंपरा को विभिन्न संतों ने भी ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार वेद, वेदांग तथा उपनिषद के साथ–साथ योग एवं दर्शनशास्त्र के सिद्धांतों जैसे–सत्य, अहिंसा एवं सत्कर्म को महत्व प्रदान किया जाता था। वैदिक काल में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत विज्ञान विषय के अंतर्गत चिकित्सा विज्ञान, खगोल विज्ञान तथा गणित जैसे विषयों की जानकारी प्रदान की जाती थी। गृहस्थ जीवन, विवाह, पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक संबंधों का ज्ञान भी वैदिक कालीन भारतीय परंपरा व शिक्षा प्रणाली में वर्णन मिलता है। अतः वैदिक कालीन ज्ञान परंपरा को हमारे भारतीय समाज में ज्ञान तथा संस्कृति के विकास का आधार माना गया है। जो मानव जीवन को सुसंगठित, सुनियोजित, सुव्यवस्थित रूप में समझने के साथ ही साथ आध्यात्मिक विकास में सहायक है। इस युग में ज्ञान स्रोत के उद्भव होने के कारण ही वैदिक काल को भारतीय ज्ञान प्रणाली की नींव के रूप में जाना जाता है।

शिक्षक की भूमिकाः गुरू–शिष्य परंपरा पर आधारित होती थी। गुरू शिष्यों के अंदर ज्ञानात्मक विकास, चारित्रिक विकास, आध्यात्मिक विकास के साथ नैतिक विकास करने में सहायक होता था। समस्त शिक्षण व्यवस्था गुरुकुल पद्धति पर आधारित थी, जिसमें गुरु शिष्यों के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते थे।

बौद्ध काल में भारतीय ज्ञान परम्परा :

भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध–कालीन शिक्षा का प्रारंभ पांचवीं –छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर भारत में प्रारम्भ हुई थी। वैदिक–कालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के बाद ही बौद्ध–कालीन शिक्षा व्यवस्था की शुरुआत हुई। बौद्ध–कालीन समस्त शिक्षण व्यवस्था ज़्यादातर मठों एवं मंदिरों से आरंभ होकर विश्वविद्यालयों में संचालित हुई। यहाँ पर धार्मिक शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा प्रदान किए जाते थे। अतः ये स्थान मुख्यरूप से ज्ञानार्जन, शिक्षा प्रदान करने एवं बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार का प्रमुख केंद्र रहे। बौद्ध–काल में प्रमुख नाम के विश्वविद्यालयों के रूप में तक्षशिला विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय और नालंदा विश्वविद्यालय का उदय हुआ। बौद्ध कालीन शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.68

विभिन्न विषयों में चिकित्साशास्त्र, दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र एवं कला जैसे प्रमुख विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता था। शिक्षा का माध्यम लिखित एवं मौखिक दोनों रूपों में पाया जाता था। बौद्ध कालीन शिक्षा एवं बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा भारत के साथ–साथ चीन, तिब्बत एवं दक्षिणी एशियाई देशों में भी हुआ। बौद्ध काल में महिलाओं तथा निम्न वर्गों की शिक्षा को समावेशी, व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक रूप से प्रदान किए जाने पर बल दिया जाता था। बौद्ध कालीन ज्ञान परंपरा ने हमारे देश के शिक्षण व्यवस्था एवं संस्कृति को निश्चित रूप से समृद्ध किया है। वैदिक कालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में ज्ञानार्जन एवं शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत बौद्ध कालीन एवं जैन कालीन शिक्षा व्यवस्था ने विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

शिक्षक की भूमिकाः बौद्ध कालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को और छात्रों के अंदर ज्ञान के प्रसार, नैतिक विकास, आध्यात्मिक विकास व अनुशासन के माध्यम से व्यवस्थित जीवन यापन करने हेतु शिक्षा प्रदान करते थे। जिसका नियमपूर्वक पालन करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाता था। शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में आमतौर पर बौद्ध भिक्षु होते थे, जिनके माध्यम से छात्रों को उच्च नैतिक एवं आध्यात्मिक स्तर के ज्ञान को प्रदान किया जाता था।

जैन काल में भारतीय ज्ञान परम्पराः

जैन कालीन शिक्षा का प्रादुर्भाव भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास के क्रम में बौद्ध कालीन शिक्षा के उपरांत माना गया है। जैन धर्म का शैक्षिक उद्देश्य मानव समाज को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह के साथ आत्म संयम जैसे मूल सिद्धांतों से जोड़ते हुए छात्रों के अंदर ज्ञानार्जन की भावना को विकसित करना था। जैन दर्शन में विभिन्न महत्वपूर्ण सिद्धांत सम्मलित हैं, जिसमें स्यादवाद एक प्रमुख पहलु है जो मुख्य रूप से सापेक्षता सिद्धांत पर आधारित है। स्यादवाद के मूल अर्थ को समझने के लिए ''स्यात्'' शब्द का अर्थ ''शायद'' या ''कथंचित्'' है। अर्थात् कोई भी कथन पूर्ण रूप से सत्य नहीं हो सकता, अपितु इसे विशेष संदर्भ अथवा परिस्थिति के अंतर्गत सत्य हो सकता है । भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत जैन धर्म के शिक्षा दर्शन में अनेकान्तवाद अर्थात् अनेकता का सिद्धांत है तथा जिसमें यह माना जाता है कि, वास्तविकता अत्यंत जटिल है तथा इसके कई बिन्दु हैं। जैन धर्म में स्यादवाद के विभिन्न बिंदुओं को समझने एवं विचारों को व्यक्त करने का एक तरीका है। जैन शिक्षा दर्शन के अंतर्गत स्यादवाद सप्तभंगी नय के द्वारा विस्तार से समझा जा सकता है। जो निम्नवत् हैं–

1.स्यात्रू अस्तिः शायद है।

2.स्यात्रू नास्तिः शायद नहीं है।

3.स्यात्रू अस्ति च नास्ति चः शायद है और नहीं भी है।

4.स्यात्रू अवक्तव्यः शायद कहा नहीं जा सकता।

5.स्यात्रू अस्ति च अवक्तव्य चः शायद है और कहा नहीं जा सकता।

6.स्यात्रू् नास्ति च अवक्तव्य चः शायद नहीं है और कहा नहीं जा सकता।

7.स्यात्रू अस्ति च नास्ति च अवक्तव्य चः शायद है, नहीं भी है और कहा नहीं जा सकता।

उपरोक्त स्यादवाद सप्तभंगी नय के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन शिक्षा दर्शन के अंतर्गत यह बताया गया है कि, किसी भी सत्य के तथ्य को पूर्ण जानकारी के लिए मनुष्य को विभिन्न

दृष्टिकोण के अनुसार जाँचने एवं परखने के बाद ही स्वयं में सापेक्ष ज्ञान के स्वरूप को समझाया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि, भारतीय ज्ञान परंपरा के सापेक्ष जैन दर्शन के अंतर्गत स्यादवाद को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत माना गया है। जो सापेक्षता, अनेकान्तवाद तथा ज्ञान की विभिन्न सीमाओं को व्यक्त करता है।

शिक्षक की भूमिका : जैन शिक्षा दर्शन के अंतर्गत शिक्षक की भूमिका अत्यंत व्यापक थी, जिसमें छात्रों को धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के साथ ही उनमें सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, और सम्यक चरित्र के निर्माण में सहायक की भूमिका थी। शिक्षक छात्रों को स्यादवाद और त्रिरत्न के सिद्धांतों के द्वारा ज्ञान प्रदान करने एवं उन्हें आत्म–संयम व अहिंसा से जोड़ने पर बल देते थे। जैन कालीन शिक्षक छात्रों को साहित्य और कला के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और समाज सेवा के लिए भी प्रेरित करते थे। इसके अलावा जैन कालीन शिक्षकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत जैन शिक्षा दर्शन में ज्ञान को अहिंसा, अपरिग्रह और आत्म–संयम से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुगलकाल में भारतीय ज्ञान परंपराः

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत वैदिक–कालीन शिक्षा ,बौद्ध–कालीन शिक्षा तथा जैन–कालीन शिक्षा के उपरांत मुस्लिम–कालीन शिक्षा का भी प्रादुर्भाव हुआ। मुस्लिम कालीन शिक्षा के दौरान शिक्षा एवं साहित्य के साथ कला एवं विज्ञान के विकास की मिश्रित तस्वीर प्रस्तुत करती है। मुगलकाल में बड़े पैमाने पर मकतबों एवं मदरसों की स्थापना की गई। छात्रों को प्राथमिक शिक्षा मकतब में तथा उच्च शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी। छात्रों को रटने पर अधिक जोर दिया गया। मुगल कालीन शिक्षण व्यवस्था में मुख्य रूप से अरबी एवं फारसी भाषा के माध्यम से शिक्षा के के प्रचार प्रसार पर बल दिया गया।

विभिन्न विषयों के अंतर्गत गणित, विज्ञान, कला, चित्रकला एवं दर्शनशास्त्र जैसे प्रमुख विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता था तथा छात्रों को गलती करने पर कठोर दण्ड की व्यवस्था थी। मानीटर प्रणाली का उदय मुस्लिम काल से ही माना जाता है। उर्दू भाषा के साथ अरबी एवं फारसी भाषाओं का प्रसार किया गया। जबकि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा भी की गई। इस दौरान भारतीय ज्ञान परंपरा के कई क्षेत्रों का विकास हुआ एवं मुगल शासकों के संरक्षण भी प्राप्त हुआ। जबकि कुछ वैदिक कालीन एवं बौद्ध कालीन भारतीय ज्ञान परंपराओं की उपेक्षा भी हुई। मुगल शासकों के संरक्षण में कई मकतबों एवं मदरसों की स्थापना हुई। जहाँ पर विज्ञान एवं इस्लाम शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। मुस्लिम कालीन शिक्षा के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत गणित, विज्ञान, खगोल शास्त्र एवं चिकित्साशास्त्र को विशेष महत्व दिया । मुस्लिम कालीन शिक्षा के दौरान भी महिलाओं को मुस्लिम शिक्षा से वंचित रखा गया। जिसके कारण स्त्री शिक्षा बहुत ही दयनीय स्थिति में थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में मुस्लिम कालीन शिक्षा के अंतर्गत स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीत, साहित्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, गणित एवं खगोलशास्त्र, चिकित्साशास्त्र तथा रसायन शास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हुए।

शिक्षक की भूमिकाः शिक्षक मुख्य रूप से इस्लाम धर्म के अंतर्गत छात्रों को अरबी और फारसी भाषा में ज्ञान प्रदान करते थे। इस दौरान मकतब और मदरसे ज्ञानार्जन के प्रमुख केंद्र थे।

जिसके अंतर्गत शिक्षक नैतिक मार्गदर्शन, धार्मिक शिक्षा, एवं आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान छात्रों को प्रदान करते थे।

ब्रिटिश–काल में भारतीय ज्ञान परम्पराः विभिन्न आयोग एवं नीतियांः

भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार ब्रिटिश शासन काल से प्रारंभ हुआ। भारत में ब्रिटिश शासन काल के दौरान 1813 ई. के चार्टर–एक्ट में वैज्ञानिक शिक्षा के प्रसार के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शुरू किया गया । इसके बाद समय अनुसार कई शिक्षा आयोगों एवं समितियों का गठन किया गया। ब्रिटिश शासन काल के दौरान बनाए गए प्रमुख आयोग जिन्होंने भारतीय शिक्षा के विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया निम्न हैं जैसे–भारतीय शिक्षा आयोग(हंटर आयोग)–1882, भारतीय विश्वविद्यालय आयोग1902–04, कोलकाता विश्वविद्यालय आयोग (शेडलर आयोग)1917–19, बेसिक शिक्षा आयोग (जाकिर हुसैन आयोग)–1937 ।

स्वतंत्रतापूर्व शिक्षक की भूमिकाः भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत ब्रिटिश काल के दौरान ज्ञान के प्रसार एवं विकास के साथ भारतीय संस्कृति के संरक्षक के रूप में शिक्षकों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। इसके अलावा छात्रों में नैतिक विकास के साथ चारित्रिक विकास के माध्यम से भारतीय समाज में सामाजिक सद्भाव को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया है। भारत में स्वतंत्रता के उपरांत गठित प्रमुख शिक्षा आयोगों ने भारतीय शिक्षा के उदय में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जैसे–

- विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग):1948–49
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) 1952–53 एवं
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग):1964–66

तदोपरांत वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ एवं उपयोगी बनाने हेतु भारत सरकार ने विभिन्न शिक्षा नीतियां बनायी और उसे क्रियान्वित किया। प्रमुख राष्ट्रीय शिक्षा नीति निम्नवत् हैं जैसे–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1968, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1992(श्रीराममूर्ति समिति–1990 तथा जनार्दन रेड्डी समिति–1992), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग–2005, एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षक की भूमिका: भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रसारित करने हेतु स्वतंत्रता के उपरांत विभिन्न शिक्षा आयोगों तथा शिक्षा नीतियों के माध्यम से विभिन्न क्रियान्वयन की योजनाओं को लागू किया । शिक्षकों का कर्तव्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना ही नहीं अपितु राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक बदलाव में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना है। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय शिक्षकों की भूमिका चुनौती पूर्ण हो गई है । शिक्षकों को छात्रों के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए ज्ञान प्रदान करने के विभिन्न अवसरों का सृजन करना, पाठ्यक्रम को छात्र केंद्रित किया गया। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों को अद्यतन तकनीकी ज्ञान के साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी से भी परिपूर्ण होना चाहिए। जिससे वे छात्रों को भी विभिन्न नवाचार के माध्यम से तकनीकी ज्ञान प्रदान कर सकें।

2047 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपराः

भारत को सन–2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने में ऐसी शिक्षा प्रदान करनी है जिससे आने वाली पीढ़ियों, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कारों से युक्त होकर समाज व राष्ट्र के विकास में अपना सकारात्मक योगदान प्रकट कर सकें। भारतीय ज्ञान प्रणाली को नई शिक्षा नीति–2020 के पाठ्यक्रम में भी शामिल करने पर बल दिया गया है। जिससे वर्तमान छात्रों में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा किया जा सके। ताकि वे स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हुए स्वयं में आत्मविश्वास पैदा कर सकें। भारतीय ज्ञान परंपरा छात्रों के ऐतिहासिक व प्राचीन ज्ञान को व्यापक रूप से अर्जित कर राष्ट्र के गौरवपूर्ण इतिहास पर एकता व भाईचारे के साथ राष्ट्रीय स्तर के उन्नति में सहयोग प्रदान कर सकें। भारतीय ज्ञान परंपरा छात्रों को विज्ञान के साथ ही साथ मूल्य परक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का समावेषन कर विभिन्न क्षेत्रों में एकीकृत रूप से ज्ञान प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो ताकि भारतीय समाज में सामाजिक सद्भावना, एकता एवं अखंडता के साथ मानव कल्याण की भावना का पुनः अंकुरण हो।

भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में नवाचार द्वारा ज्ञान के परिमार्जन में सहायक हो। भारतीय ज्ञान परंपरा का भारतीय समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जो सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित है। जिसमें वर्तमान समाज को शिक्षा में नवाचार के माध्यम से अधुनातन करने तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से समन्वय स्थापित करने में सहायक होगा ।

भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्यों में आत्मबोध के साथ आत्म–ज्ञान एवं आत्म–अभिव्यक्ति के द्वारा स्वयं को ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित करने में सहायक होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा को नई शिक्षा नीति–2020 के माध्यम से छात्रों को दृष्टिगत रखते हुए वैज्ञानिक और तकनीकी सुधार किए जाने तथा समस्त शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को छात्र–केंद्रित बनाए जाने की आवश्यकता पर बल देती है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि, भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसका प्रभाव भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों काल में परिलक्षित होता रहेगा।

शिक्षक की भूमिकाः 2047 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षकों की भूमिका के अंतर्गत छात्रों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना अपितु आधुनिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। जिसके अंतर्गत छात्रों में चरित्र निर्माण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा एवं नवाचार के माध्यम से छात्रों के बेहतर भविष्य के लिए आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में सहयोग प्रदान करना है। २१वीं सदी में जबकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से किसी भी प्रश्न के उत्तर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है, फिर भी छात्रों को शिक्षकों की आवश्यकता महसूस होती है, क्योंकि शिक्षक छात्रों के भावनाओं को समझते हुए उनके सवालों का सही व उद्देश्यपूर्ण उत्तर देने में सार्थक सिद्ध होते हैं। छात्रों की अध्ययन संबंधित आवश्यकताओं को समझते हुए पाठ्यक्रम को रुचिकर एवं नवीन शिक्षण–विधियों के प्रयोग के माध्यम से जटिल से जटिल प्रकरण को आसान व सरलतम रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को विभिन्न उपागमी रणनीतियों, विधियों और तकनीकियों आदि का उपयोग कर गुणवत्तापूर्ण बना सकता है ।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.68

भारतीय ज्ञान परंपराः विष्लेशणात्मक अध्ययनः

क. सं.	भारतीय ज्ञान पंरपरा में विभ्भिन काल	शिक्षक की भूमिका
1	वैदिक काल	धर्मग्रंथों का ज्ञान प्रदान करना। छात्रों में ज्ञानात्मक विकास करना। छात्रों में चारित्रिक विकास करना। छात्रों में आध्यात्मिक विकास करना। छात्रों में नैतिक विकास करना। पथ–प्रदर्शक का कार्य करना।
2	बौद्ध काल	ज्ञान का प्रसार करना। नैतिक विकास करना। चारित्रिक विकास करना। आध्यात्मिक विकास करना। अनुशासन के माध्यम से जीवन यापन हेतु प्रोत्साहित करना।
4	जैन काल	धार्मिक शिक्षा प्रदान करना। नैतिक विकास करना। आध्यात्मिक विकास करना। चिरत्र के सिद्धांतों पर ज्ञान प्रदान करना। अहिंसा अपरिग्रह व आत्म संयम पर बल। साहित्य एंव कला का ज्ञान प्रदान करना। शिक्षा स्वास्थ्य औश्र समाज सेवा पर बल।
4	मुस्लिम काल	इस्लाम धर्म का प्रसार करना। धार्मिक शिक्षा प्रदान करना। आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करना। नैतिक–मार्गदर्शक के रूप में। छात्रों को बेहतर इंसान बनाना।
5	ब्रिटिश काल–स्वतंत्रता पूर्व भारतीय ज्ञान पंरपरा	ज्ञान का प्रसार करना। भारतीय संस्कृति को संरक्षित करना। छात्रों में नैतिक विकास करना। छात्रों में चारित्रिक विकास करना। समाजिक सद्भाव विकसित करना।
6	स्वतंत्रता के बाद भारतीय ज्ञान परम्परागत	ज्ञान का प्रसार करना। छात्रों का सर्वागीण विकास करना। नवाचार से अवगत रहना। नये ज्ञान के अवसर खोजना। सूचना एंव तकनीकी से परिपूर्ण रहना। परामर्श एंव निर्देशन में मदद करना। लचीले पाठ्यक्रम का निर्माण करना। शिक्षण प्रक्रिया को रूचिकर बनाना।

निश्कर्श–

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास के क्रम में वैदिक कालीन शिक्षा से प्रारंभ होकर वर्तमान में लागू नई शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतियों के ज्ञानार्जन के साथ–साथ विज्ञान, कला, साहित्य, दर्शनशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाए। वैदिक कालीन शिक्षा के दौरान गुरू अपने शिष्यों को केवल मौखिक रूप से शिक्षा प्रदान करता था है और समस्त शिक्षा गुरुकुल में पूरी होती थी। इस समय गुरु का स्थान श्रेष्ठ होता था। गुरु अपने शिष्यों को वेद, वेदांग

तथा उपनिषद जैसे ग्रंथों के विषय में मौखिक ज्ञान प्रदान करते थे तथा छात्र गुरु द्वारा कहे गए कथन को रटने का कार्य करते थे। बौद्धकाल के दौरान छात्रों को शिक्षा मठों, मंदिरों एवं विश्वविद्यालयों में प्रदान किया जाता था। बौद्ध धर्म में ज्यादातर बौद्ध धर्म से जुड़े हुए धार्मिक शिक्षा के प्रचार प्रसार पर जोर दिया गया। बौद्ध भिक्षुओं ने मुख्य रूप से चीन के बाद तिब्बत तथा दक्षिणी एशियाई देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार करने का कार्य किया। जैन कालीन शिक्षकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत जैन शिक्षा दर्शन में ज्ञान को अहिंसा, अपरिग्रह और आत्म– संयम पर बल दिया।

मुस्लिम कालीन शिक्षा मुख्यता मकतब और मदरसों में पूरी हुई। छात्रों को प्राथमिक शिक्षा के मकतब में तथा उच्च शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी। मुस्लिम कालीन शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक छात्रों को रटने एवं धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर देते थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका व्यापक एवं अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो चुकी है। जिसके अंतर्गत छात्रों के विभिन्न विषयों जैसे– हिंदी, गणित, अंग्रेजी, कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, इतिहास, नैतिक शिक्षा तथा कंप्यूटर जैसे तकनीकी ज्ञान को समन्वित रुप से प्रदान करना है। छात्रों को विभिन्न आनलाइन मोबाइल एप्लिकेशन जैसे– गूगल क्लासरूम ,खानएकेडमी, अनएकेडमी, वेदांतु, ब्रेनली इत्यादि एवं ई–प्लेटफर्मों जैसे–विशाल मुक्त आनलाइन पाठ्यक्रम, स्वयं पोर्टल, ज्ञान–विज्ञान पोर्टल, ई–पीजी पाठशाला, ई–शोधसिंधु, ई–शोधगंगा इत्यादि के माध्यम से छात्रों को अध्ययन एवं शोधकार्य करने का उचित मंच प्राप्त हुआ है।

अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान के परिदृश्य में शिक्षा नवाचार के साथ तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से ज्ञान को सभी लोगों तक सुलभता से पहुँचाने में सहायक हुई है। परंतु जब तक शिक्षा को पारम्परिक ज्ञान जैसे वेद उपनिषद वेदान्त जैसे ग्रंथों में निहित विज्ञान से परिचित नहीं कराया जाएगा तब तक उसमें अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं तथा ध्यान का वास्तविक तथ्यात्मक ज्ञान तार्किक रूप से कैसे पूरा होगा इसलिए आवश्यक है कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान के साथ विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान की नवाचार विधियों को ज्ञान निश्चित रूप से भारतीय युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक उन्नति पर निःसंदेह गर्व का अनुभव होगा तथा यह ज्ञान भविष्य की पीढ़ियों तक स्थानांतरित होगा। जो भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से भारत को सन–2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। वर्तमान में शिक्षकों का यह दायित्व है कि, वे नई शिक्षा नीति–2020 को भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से छात्रों के ज्ञान से जोड़ते हुए विकसित भारत के लक्ष्य को सन–2047 तक प्राप्त करने में सहायता प्रदान करें ।

संदर्भ

1. ALTEKAR,A.S.(2009). Education in Ancient India,Isha Books, New Delhi,
2. Darjan.(2023). Reason, Religion, & Nation: Syed Ahmad Khan.
3. Grover, Virender.(1993). Political thinker of Modern India-17:AbulKalam Azad.
4. Gupta,S.P.& Gupta,Alka.(2023).History of Indian Education, Sharada Publication, Prayagraj.

5. Gupta,S.P.& Gupta,Alka.(2023). National Educational Policy -2020,Sharada Publication, Prayagraj.
6. Saxena,Manoj K. & G.S, Anu(2019). National Educational Policy on Higher Education, Prahat Publication,New Delhi, 1st Edition.
7. अरोड़ा,पंकज.,शर्मा,उषा (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, रचनात्मक सुधारों की ओर, शिप्रा प्रकाशन, प्रतापगंज, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण
8. सिरोला,देबकी. पोखरियाल,सिद्धार्थ. सिरोला,एसएस। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा, कुणाल बुक्स पब्लिकेशन,न्यू दिल्ली।
9. https://onlinecourses.swayam2.ac.in/ntr25_ed37/preview
10. https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/102090
11. https://knowledgeableresearch.com/index.php/1/article/view/398
12. https://www.erpublications.com/uploaded_files/download/_nrlNq.pdf
13. https://www.researchgate.net/publication/338013961
14. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2401871.pdf
15. https://jvbi.ac.in/index.php?option=com_k2&view=item&id=1387:2025-03-10-05-45-34
16. https://www.erpublications.com/uploaded_files/download/_nrlNq.pdf
17. https://uou.ac.in/downloads/12b/Research-and-Innovation/Research%20Publications/Research%20Paper%201%20-%20Akhilesh%20Singh.pdf
18. https://www.khanglobalstudies.com/blog/indian-knowledge-and-science-tradition-in-hindi/?srsltid=AfmBOooTn_282By-PqhEnPscMjf5H2qWA0Y-JwX4UfkuopEd6fS4IA29